International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 13 Issue 4, July-August, 2025

शिक्षा के विकास में मीडिया की भूमिका (सीकर जिले के संदर्भ)

डॉ. मुकेश कुमारी[1], कृष्णा चौधरी[2]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, बियानी गर्ल्स बी. एड. कॉलेज
[2]बी. एड. एम. एड. छात्रा बियानी गर्ल्स बी. एड. कॉलेज

सारांश

प्रौद्योगिकी के आगमन और विकास के साथ सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग और विभिन्न डिजिटल मीडिया प्लेटफॉर्म के आ जाने से विद्वान मीडिया और शिक्षा के विषय की खोज में रूचि रखने लगे है। जनसंचार मीडिया और डिजीटल मीडिया किसी विशेष कार्य को करने के लिए विभिन्न उपकरणों का उपभोग करने की बजाए एक ही डिजिटल उपकरण के माध्यम से सूचना को सम्प्रेषित और प्रसारित करने के आसान तरीके है। मीडिया के प्रभाव और शक्ति को कम करके नहीं आंका जा सकता। जनसंचार मीडिया अब नया नहीं है लेकिन नये युग का डिजिटल मीडिया इस क्षेत्र में एक नये खिलाडी के रूप में खड़ा है और इसका उपयोग देश में शिक्षा क्षेत्र को रूपान्तरित कर सकता है। मीडिया और डिजिटल मीडिया में लाखों और अरबों लोगों तक जल्दी पहुंचने और निर्बाध सूचना फैलाने की शक्ति है। इस कारण यह दुनिया में एक महत्वपूर्ण समाजीकरण और सामाजिक परिवर्तन का एजेंट बन रहा है।

की वर्ड :–शिक्षा, विकास, मीडिया

प्रस्तावना

अधिगम की नई प्रक्रियाओं और तकनीकों के माध्यम से नई तरंगे उत्पन्न कर रहे है। जिसमें शिक्षार्थी की भी प्रमुख भूमिका होती है। शिक्षा क्षेत्र विकसित हो रहा है, जिससे लोगों को शिक्षित करने और स्वयं को शिक्षित करने के लिए भिन्न–भिन्न उपकरणों और प्लेटफॉर्मों का उपयोग किया जाता है। जनसंचार मीडिया, डिजिटल मीडिया और नये युग की सूचनात्मक डिजिटल प्लेटफार्म की प्रक्रिया भौतिक स्थान और समय के अवरोध के बिना कहीं भी सूचना और सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित करती करती है। नये मीडिया और प्लेटफॉर्मों के उपयोग ने विशेष रूप से सामाजिक नेटवर्किंग और संगठनात्मक सम्प्रेषण के क्षेत्र में उत्पादक और रचनात्मक अधिगम के उद्देश्यों के लिए शिक्षा के क्षेत्र में अपनी जगह बनाने की कोशिश कर रहा है। दुनिया के हर भाग में डिजिटल मीडिया के उपयोग ने रचनात्मकता, उत्कृष्टता, गति और सहभागिता से हमारा परिचय कराया है और अधिगम में मनोरंजन का तत्व जोड़ा है। डिजिटल मीडिया छात्रों और शिक्षकों के बीच फल–फूल रहा है। जैसा कि के वे अधिगम के लिए भिन्न–भिन्न प्लेटफॉर्मों तक पहुंचने के लिए घर पर विभिन्न डिजिटल उपकरणों का उपयोग कर सकते है। इस प्रकार अधिक लोगों को बेहतर और अधिक तेजी से सीखाने के लिए नये मीडिया प्लेटफॉर्म शुरू करके और उन्नत तकनीकें, उपकरण लाकर।

शिक्षा के लिए मीडिया का उपयोग अभी भी शैशवावस्था में है। इस इकाई में हम इनमें से कुछ पहलुओं की जाँच पड़ताल करना चाहेंगे।

मीडिया का शिक्षकों, पत्रकारों, निर्माताओं, अन्य व्यवसायियों और बच्चों के प्रशिक्षण में बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है। इसने उपयोगकर्ता के लिए दोहरा दृष्टिकोण अपनाकर अधिगम और शैक्षिक अवसरों को बढ़ाने में मदद की है। (प्रारंभ करने वाले की स्थिति में भूमिका निभाई जा रही है और कभी–कभी एक शिक्षक की स्थिति में) जैसा कि मीडिया द्वारा निभाई गई सबसे महत्वपूर्ण भूमिका शिक्षा और सामुदायिक विकास क्षेत्र का ज्ञान है। वे अन्य लोगों की संस्कृतियों, अभिवृत्तियों, जातियों, पंथो मृजातियता और सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि को पहचानने में मदद करते है ताकि वे एक–दूसरे के साथ प्रभावी ढंग से सम्प्रेषण और कार्य कर सके। इस

प्रकार मीडिया ने विभिन्न संस्कृतियों और पृष्ठभूमि के लोगों के सामने आने वाली बाधाओं से परिचित होने में मदद की है।

अध्ययन का औचित्य :–

वर्तमान युग सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) का युग है, जहाँ मीडिया ने जीवन के हर क्षेत्र में अपनी गहरी पैठ बनाली है। विशेष रूप से शिक्षा के क्षेत्र में मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। डिजिटल माध्यमों, जैसे कि टेलीविजन, रेडियो, इंटरनेट और सोशल मीडिया ने शिक्षण और अधिगम की पारंपरिक पद्धतियों को एक नई दिशा दी है।COVID-19 जैसी वैश्विक महामारी ने यह सिद्ध कर दिया कि बिना मीडिया के शिक्षा प्रणाली लगभग ठप हो सकती है। ऐसे समय में ऑनलाउन शिक्षा प्लेटफॉर्म, टेलीविजन कार्यक्रम और मोबाइल एप्लिकेशन ने विद्यार्थियों को निरंतर शिक्षा से जोड़े रखा।मीडिया की भूमिका के प्रभाव, उसकी पहुंच, प्रभावशीलता और चुनौतियों को समझना आज की आवश्यकता है ताकि शिक्षा को अधिक प्रभावशाली समावेशी और समान बनाया जा सके। इस समस्या के अध्ययन से यह ज्ञात होगा कि मीडिया कैसे शिक्षा के विस्तार, गुणवता सुधार और डिजिटल डिवाइस को कम करने में सहायक हो सकता है।अतः मैंने इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा के विकास में मीडिया की भूमिका शोध कार्य के लिए चुना।

समस्या कथन –

"शिक्षा के विकास में मीडिया की भूमिका (सीकर जिले के संदर्भ में)"

अध्ययन के उद्देश्य –

1. यह समझना कि मीडिया शिक्षा के क्षेत्र में किस प्रकार योगदान दे रहा है।
2. शिक्षा के प्रचार–प्रसार में विभिन्न मीडिया माध्यमो (जैसे–टीवी, रेडियो, इंटरनेट, सोशल मीडिया) की भूमिका का विश्लेषण करना।

परिकल्पनाएँ –

(1) सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शिक्षा विकास में मीडिया के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

(2) सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र व छात्राओं के शिक्षा विकास में मीडिया के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

सम्बन्धित साहित्य

- गिरधर**,** विनोद कुमार)**2024)** - इस अध्ययन का उद्देश्य था कि 11 वीं स्तर के अधिग्रहीताओं की वैयक्तिक भिन्नता के सम्बन्ध में गणित विषय को पढ़ने के लिए कंप्यूटर आधारित ट्यूटोरियल सॉफ्टवेयर के सन्दर्भ में क्या प्रभाव पड़ा। जिसका निष्कर्ष निकला कि कक्षा 11 के अधिग्रहिताओं कि वैयक्तिक भिन्नतायों के संबंध में गणित विषय की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया गया। बीकानेर व जोधपुर जिले के कक्षा 11 स्तर के अधिग्रहितायों कि वैय्क्तिम भिन्नताओं के संबंध में गणित विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर कंप्यूटर आधारित ट्यूटोरियल सॉफ्टवेयर अनुदेशन के प्रभाव तथा उसके प्रति अभिवृत्ति अंतर पाया जाता है। बीकानेर में जोधपुर जिले के कक्षा ग्यारहवीं सर के अधिग्रहिताओ कि व्यक्ति के नेताओं के संबंध में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया।
- गांधी,संतोष कुमारी)**2023)** - इनका उद्देश्य पाठ्य पुस्तकों की सहायता से अध्ययन करने वाले इंटरनेट आधारित अधिगम सामग्री का अध्ययन करना था। जिसका निष्कर्ष निकाला की पाठ्य पुस्तकों की सहायता से अध्ययनकरने वाले बालकों के प्रति इंटरनेट की अधिगम सामग्री का अध्ययन प्रयोग करने वाले छात्रों की निष्पत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- प्रधान,जी)एस.**2022)** - इनका उद्देश्य सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों में विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के नैतिक निर्णय के विकास में उनकी सामान्य बुद्धि,व्यक्तिगत मूल्य एवं अभिवृत्ति का

तुलनात्मक अध्ययन करना था। इन्होंने अपने शोध में पाया कि सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों में विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के नैतिक निर्णय के विकास में उनकी सामान्य बुद्धि,व्यक्तिगत मूल्य एवं अभिवृत्ति के संबंधी मूल्यों में सकारात्मक सह आर्थिक व सामाजिक ही साथ गया। पाया संबंध-गया पाया संबंध-सह का प्रकार विभिन्न में परिस्थितियों, परंतु शक्ति संबंधी मूल्यों में ऋणात्मक निम्न सहसामाजिक गया। पाया संबंध -,जनतांत्रिक,आर्थिक, पारिवारिक,ज्ञानात्मक, सुखात्मक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। परंतु राजकीय विद्यालय और व्यक्तिगत विद्यालयों के विद्यार्थियों में स्वास्थ्य और धर्म संबंधी मूल्यों में सार्थक अंतर पाया गया।

- मित्रा,स्टीफेंसीमीयर)**2021)** - इनका उद्देश्य था की इंटरनेट आधारित अधिगम सामग्री का प्रयोग करने वाले तथा पाठ्य पुस्तकों का प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों के कंप्यूटर तकनीकी के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना और इन्होने अपने शोध के परिणाम स्वरुप इंटरनेट आधारित अधिगम सामग्री का प्रयोग करने वाले तथा पाठ्य पुस्तकों का प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों के कंप्यूटर तकनीक के प्रति अभिवृत्ति स्तर में कोई सार्थक अंतर प्राप्त नहीं हुआ।
- लुकास ब्रूनो,**(2019)** - इनका उद्देश्य था कि इंटरनेट पर उपलब्ध सर्वाधिक लोकप्रिय सहित फ़ेसबुक का युवा वर्ग पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव को बताना। यह का निष्कर्ष निकला कि इंटरनेट पर उपलब्ध सुविधा फ़ेसबुक के द्वारा दुनिया की संबंधी सभी प्रकार तथा महत्वपूर्ण तथा संपूर्ण जानकारी प्रदान की जाती है परंतु इंटरनेट प्रयोग करता द्वारा फेसबुक का प्रयोग अधिकांशतः है नकारात्मक रुप से किया जाता है।

साहित्य विवेचना :–

प्रस्तुत शोध में शिक्षा के विकास में मीडिया की भूमिका (सीकर जिले के संदर्भ में)अध्ययन करना है। इससे सम्बन्धित अध्ययन निम्न है –गिरधर, विनोद कुमार) **2024),** गांधी, संतोष कुमारी) **2023),** प्रधान, जीएस.) **2022),** मित्रा, स्टीफेंसीमीयर) **2021),** लुकास ब्रूनो, **(2019)** अतः उपरोक्त शोध अध्ययनों में मीडिया की भूमिका के प्रभाव, उसकी पहुंच, प्रभावशीलता और चुनौतियों को समझना आज की आवश्यकता है ताकि शिक्षा को अधिक प्रभावशाली समावेशी और समान बनाया जा सके। इस समस्या के अध्ययन से यह ज्ञात होगा कि मीडिया कैसे शिक्षा के विस्तार, गुणवता सुधार और डिजिटल डिवाइस को कम करने में सहायक हो सकता है।

प्रयुक्त शोध विधि :–

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध न्यादर्श :–

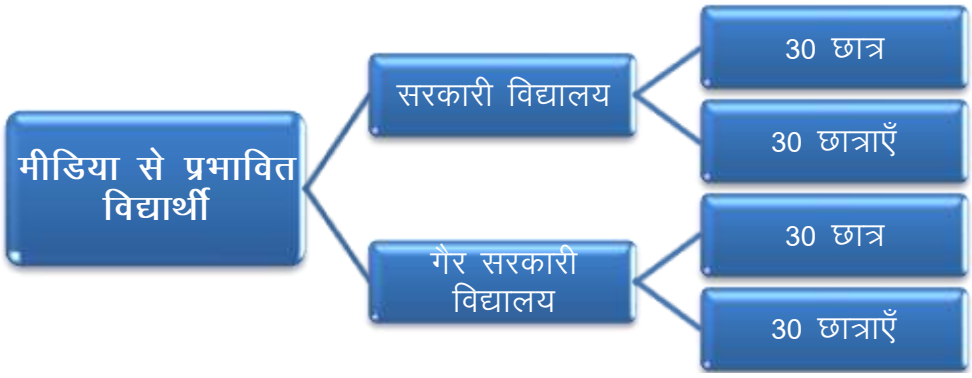

शोध में प्रयुक्त उपकरण –

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शिक्षा के विकास में मीडिया की भूमिका अध्ययन करना हैं अतः इस हेतु शोध उपकरण के रूप में **स्वनिर्मित प्रश्नावली** का उपकरण के रूप में प्रयोग किया गया है।

अध्ययन के चर : –

- **स्वतंत्र चर** :मीडिया
- **आश्रित चर** :माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी

(1) सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शिक्षा विकास में मीडिया के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

विद्यालयों के प्रकार	विद्यार्थियों की संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–मान (t)
सरकारी	60	21.98	2.21	0.32
गैर सरकारी	60	21.85	2.20	

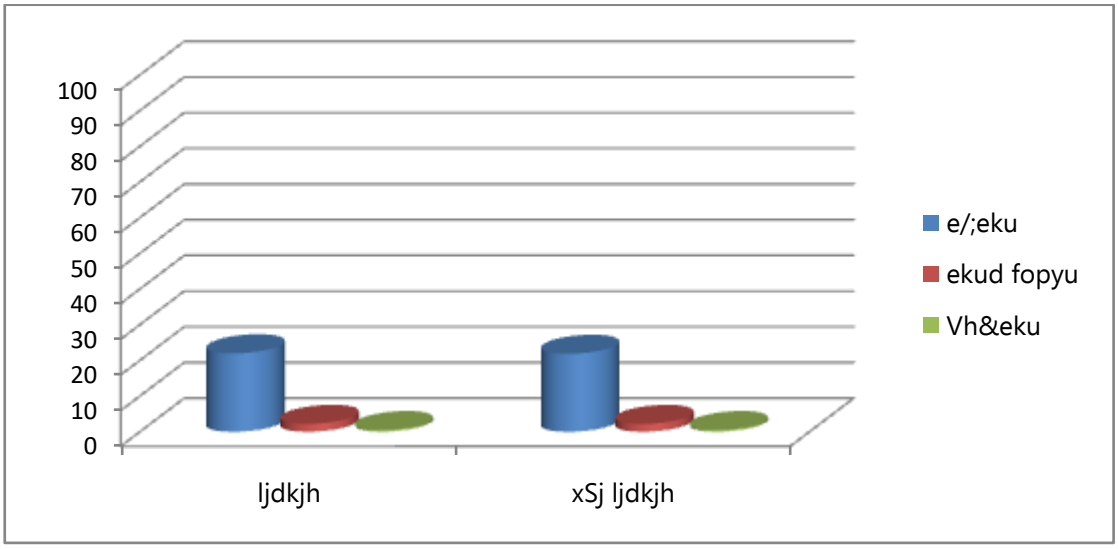

परिणाम

सारणी को देखने से ज्ञात होता है कि सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में मीडिया के प्रभाव का मध्यमान 21.98 व गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में मीडिया के प्रभाव का मध्यमान 21.85 है। सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का मानक विचलन 2.21 व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का मानक विचलन 2.20 है। सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शिक्षा विकास में मीडिया के प्रभाव के मध्य सार्थकता अन्तर ज्ञात करने पर टी–परीक्षण 0.32 प्राप्त हुआ।स्वतंत्रता के अंश कि= (छ$_1$. छ$_2$) = 60. 60 दृ 2 त्र 118 प्राप्त हुआ। इस आधार पर टी–मूल्य के सारणीगत मान 0.01 एवं 0.05 स्तर पर देखे गये जो क्रमशः 2.63 एवं 1.98 है, जो कि टी–मूल्य की गणना द्वारा प्राप्त मान से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना सार्थकता के दोनों स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

(2) सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शिक्षा विकास में मीडिया के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

विद्यार्थियों के प्रकार	विद्यार्थियों की संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–मान (t)
छात्र	30	22.23	2.29	0.87
छात्राएँ	30	21.73	2.12	

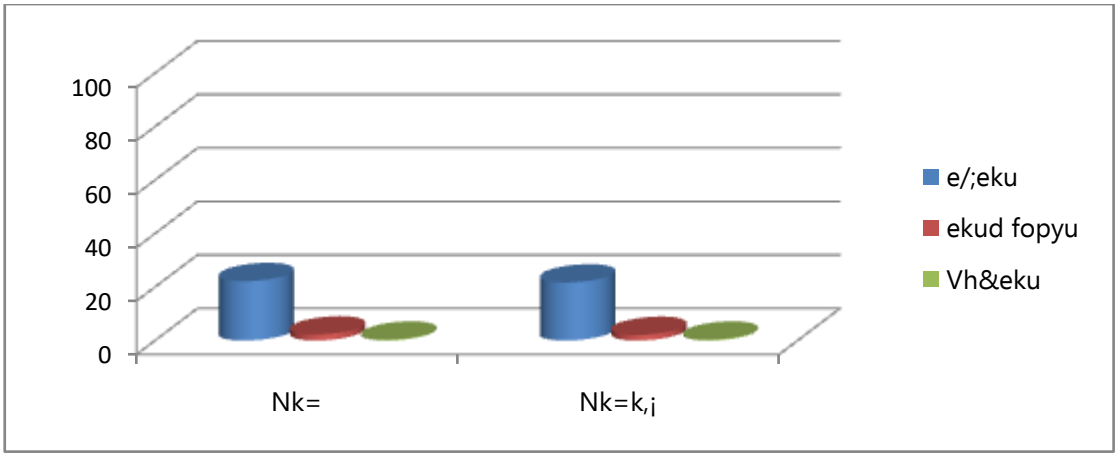

परिणाम

सारणी को देखने से ज्ञात होता है कि सरकारी विद्यालयों के छात्रों में मीडिया के प्रभाव का मध्यमान 22.23 है तथा सरकारी विद्यालयों की छात्राओं में मीडिया के प्रभाव का मध्यमान 21.73 है। सरकारी विद्यालयों के छात्रों का मानक विचलन 2.29 व छात्राओं का मानक विचलन 2.12 है। सरकारी विद्यालयों के छात्र व छात्राओं के शिक्षा के विकास में मीडिया के प्रभाव के मध्य सार्थकता अन्तर ज्ञात करने पर टी–परीक्षण 0.87 प्राप्त होता है।स्वतंत्रता के अंश कf= (छ$_1$. छ$_2$) = 30. 30 – 2 = 58 प्राप्त हुआ। इस आधार पर टी–मूल्य के लिए सारणीगत मान 0.01 एवं 0.05 स्तर पर देखे गये जो क्रमशः 2.66 एवं 2.00 है, जो टी–मूल्य की गणना द्वारा प्राप्त मान से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना सार्थकता के दोनों स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष

सांख्यकीय दृष्टि से सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शिक्षा विकास में मीडिया के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। बल्कि यह अन्तर अवास्तविक अथवा संयोगवश है।सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों व छात्राओं के शिक्षा विकास में मीडिया के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों व छात्राओं के शिक्षा विकास में मीडिया के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।सरकारी विद्यालय के छात्र व गैर सरकारी विद्यालय की छात्राओं के शिक्षा विकास में मीडिया के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।गैर सरकारी विद्यालय के छात्र व सरकारी विद्यालय की छात्राओं के शिक्षा विकास में मीडिया के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. भटनागर,एम. बी. मीनाक्षी 2006 " भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकास",आर.लाल बुक डिपो, मेरठ,।
[2]. बेस्ट, जे. डब्ल्यू 1959 "रिसर्च इन एजुकेशन, प्रिन्टिग हॉल ऑफ इण्डिया,चाइल्ड, फेयर 1967 "मेजरमेन्ट एण्ड एजुकेशन इन साइकोलॉजी"।
[3]. ढौढ़ियाल, डॉ. सच्चिदानन्द 2004 शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र, अरविन्द लायल बुक डिपों, मेरठ,
[4]. गौतम, ओ. पी ह्यूमन राइट्स इन इंडिया एन आर्टिकल इन टुवार्ड राइट्स फेमवर्क
[5]. जेम्स, चिरण्य काण्घन ह्यूमन राइट्स इन इंडिया, कन्सेप्ट्स एण्ड कन्टेक्ट्स कन्टेम्परी साउथ एशिया, खण्ड –2, संख्या 3